मांगटीकेसे कर्णाभूषणतकके अलंकार

अलंकारोंका अध्यात्मशास्त्र एवं सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग !

卐 卐

भूमिका

त्योहार-उत्सवादि अवसरोंपर आज भी हिन्दू स्त्रियां सम्पूर्ण शरीरपर अलंकार धारण कर सुशोभित होती हैं । अलंकारोंसे स्त्रीका लावण्य अधिक निखरता है । विविध प्रकारके अलंकार धारण करनेका उद्देश्य केवल सौन्दर्यवृद्धि नहीं है । हिन्दू धर्ममें प्रत्येक अलंकार उस विशिष्ट स्थानपर धारण करनेके पीछे अर्थपूर्ण अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोण है । यही दृष्टिकोण इस ग्रन्थमें बताया गया है ।

अलंकार ईश्वरीय चैतन्यके संग्राहक एवं अनिष्ट शक्तियोंके निर्दलनकर्ता हैं । अलंकार धारण करनेसे अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट अल्प होकर शरीरमें विद्यमान उस विशिष्ट स्थानकी काली शक्ति नष्ट होनेके साथ ही सात्त्विकता बढनेमें भी सहायता मिलती है । अलंकार धारण करनेके सूक्ष्म परिणाम स्थूल नेत्रोंसे नहीं दिखाई देते; परन्तु उन्हें सूक्ष्मरूपसे अनुभव किया जा सकता है । सूक्ष्मका ज्ञान समझनेमें सक्षम सनातनकी कुछ साधिकाओंद्वारा इस सन्दर्भमें किए गए 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी परीक्षण' एवं बनाए गए 'सूक्ष्म ज्ञान सम्बन्धी चित्र' देखनेपर अलंकारधारणा का महत्त्व मनपर सुदृढ होता है । अलंकारधारणासे साधिकाओंको हुई अनुभूतियां अलंकारोंके प्रति श्रद्धा बढाती हैं ।

अलंकारधारणासे अपेक्षित आध्यात्मिक लाभ होने हेतु अलंकारोंका सात्त्विक होना आवश्यक है । अलंकारका आकार एवं उसकी कलाकृतिके साथ ही अलंकार धारण करनेवाला व्यक्ति सात्त्विक हो, तो अलंकारसे सात्त्विकता एवं चैतन्य किस प्रकार प्रक्षेपित होता है, यह इस ग्रन्थमें दिए कुछ सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी प्रयोगोंसे ज्ञात होगा । सात्त्विक अलंकारोंके साथ ही तामसिक अलंकारोंको कैसे पहचानें, इस अनुभवके लिए दोनों प्रकारके अलंकारोंके छायाचित्र एवं 'सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी परीक्षण' ग्रन्थमें दिए हैं ।

अलंकारधारणाका महत्त्व ध्यानमें रख उस अनुसार कृति कर, अर्थात अलंकार धारण कर ईश्वरके निकट जानेका मार्ग अधिक सुगम हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

卐 卐

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. केशमें धारण करनेयोग्य अलंकार ११

२. कुमकुम (सौभाग्यालंकार) २७

* कुमकुम कब एवं कैसे लगाएं ? २८

* बिन्दी लगानेकी अपेक्षा कुमकुम लगाना अधिक योग्य क्यों ? ३१

* 'सात्त्विक कुमकुम' एवं 'सात्त्विक मोम' ३३

* विधवाओंको कुमकुम क्यों नहीं लगाना चाहिए ? ३४

३. कानमें धारण किए जानेवाले अलंकार ३७

४. नाकमें धारण किए जानेवाले अलंकार : नथ एवं लौंग ५८

५. स्वर्णकी सिकडी सदैवके स्थानपर धारण न कर दूसरे अलंकारोंके स्थानपर धारण कर किया गया सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी प्रयोग ७०

६. अलंकारोंसे सम्बन्धित देवता, देवताका कार्यरत भाव, अलंकार धारण करनेवालेका तथा उसे देखनेवालेका भाव ७३

७. आध्यात्मिक कष्टसे पीडित तथा कष्टमुक्त जीवोंको अलंकार धारण करनेपर तारक एवं मारक स्तरोंपर होनेवाला लाभ ७४

८. विविध अलंकारोंसे जीवको होनेवाली अनुभूतियोंकी मात्रा ७४

卐 कुछ अन्य सम्बन्धित सूत्र ७५

卐 अलंकारोंसम्बन्धी आलोचना अथवा अनुचित विचार एवं उनका खण्डन ७९